International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फतेहगढ़ साहिब जिला, पंजाब के अमलोह तहसील का पुरातात्विक सर्वेक्षणः एक अध्ययन

अनिल यादव
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
के.एल.पी.कॉलेज (रेवाड़ी), हरियाणा

डॉ. यशवीर सिंह, इतिहास विभाग
जे.वी.एम.जी.आर.आर. महाविद्यालय, चरखी दादरी

सार :

वर्तमान शोध पत्र अमलोह तहसील जिला फतेहगढ़ साहिब (पंजाब) में 2016 के दौरान किए गए हालिया सर्वेक्षण पर चर्चा करता है। सर्वेक्षण के अनुसंधान उद्देश्यों में क्षेत्र में मानव व्यवसाय का यथासंभव पूर्ण रिकॉर्ड बनाने के लिए सभी प्रकार के सांस्कृतिक अवशेषों के आधार पर संरक्षण की स्थिति के साथ स्थान, आकार, जमाव, विशेष अवधि की पहचान करना आदि था। परिणामस्वरूप आद्य–ऐतिहासिक काल से प्रारंभिक मध्यकाल से जुड़े प्राचीन अवशेषों के 29 पुरास्थलों का दस्तावेजीकरण किया गया। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित सामग्री के आधार पर क्षेत्र की सांस्कृतिकक्रमता को समझकर प्राचीन लोगों का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्दः–*अमलोह, फतेहगढ़ साहिब, सर्वेक्षण, हड़प्पा, धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड*

परिचय :

भारतीय इतिहास और पुरातत्व की उचित समझ के लिए, पंजाब के अतीत की गहराई से जांच करना नितांत आवश्यक है। इसलिए पंजाब पुरातात्विक पूर्वेक्षण के लिए एक विशाल और सबसे आकर्षक क्षेत्र प्रदान करता है लेकिन दुर्भाग्य से इस भूमि का अभी भी अपर्याप्त सर्वेक्षण किया गया है। निश्चित रूप से पंजाब के पुरातत्व के बारे में अभी बहुत कुछ पता लगाना और समझना बाकी है। यह आवश्यक है कि पुरातत्वविद और विद्वान प्राचीन संस्कृति के ज्ञान और महत्व को प्रभावी ढंग से प्रसारित करने के साधन खोजें। अब तक इतिहास की बाधा का प्रतिकार करने के लिए अमलोह तहसील जिला फतेहगढ़ साहिब (पंजाब) के पुरातात्विक स्थलों का विस्तृत सर्वेक्षण किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थानः

पंजाब का क्षेत्र प्रारम्भिक काल से कृषि समुदायों के लिए रुचि का विषय क्षेत्र है क्योंकि यह क्षेत्र दोआब अर्थात यमुना और सतलुज का क्षेत्र होने के कारण कृषि समुदायों के लिए प्रारम्भिक काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। सतलुज–यमुना दोआब का क्षेत्र होने के कारण ही यहाँ पर अनेक प्रकार के जीव–जन्तु एवं अन्न की किस्में विकसित हुई। पहली बार पंजाब शब्द का इस्तेमाल शेरशाह सूरी द्वारा किया गया था उसने अपनी पुस्तक ''तारीख–ए–शेर'' में किया था।[1] पंजाब का नाम फिर से 'आईने अकबरी' मैं लिया गया है जो अबुल फजल द्वारा लिखित है जिसमें यह उल्लेख है कि पंजाब का क्षेत्र दो प्रांतों लाहौर और मुल्तान में विभाजित था। फारसी में ''पंजाब'' का शाब्दिक अर्थ है पंज (पाँच) आब (जल) यानी पाँच नदियों की भूमि, इस प्रकार पाँच नदियों का जिक्र है जो इस प्रदेश के मध्य से गुजरती थी, आज भारतीय पंजाब में दो नदियाँ बहती हैं और दो नदियाँ पाकिस्तानी पंजाब में है और एक नदी उनके बीच की सामान्य सीमा है।[2] फतेहगढ़ साहिब जिले का गठन 13 अप्रैल, 1992 को पटियाला, लुधियाना और रूपनगर जिलों के हिस्सों को मिलाकर किया गया था। फतेहगढ़ साहिब का नाम ऐतिहासिक गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब के नाम पर रखा गया है। फतेहगढ़ साहिब जिला 30°68′ उत्तरी अक्षांश एवं 76°41′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। फतेहगढ़ साहिब जिला उत्तर में लुधियाना और रोपड़, दक्षिण में पटियाला, पूर्व में रोपड़ और पटियाला के कुछ हिस्सों और पश्चिम में लुधियाना और संगरूर के कुछ हिस्सों से घिरा हुआ है और राजधानी चंडीगढ़ से पश्चिम की ओर 50 किलोमीटर है।[3] फतेहगढ़ साहिब जिले का अमलोह तहसील 30°61′उत्तरी अक्षांश एवं 76°23′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। अमलोह, तहसील मुख्यालय है। इस तहसील में 99 गाँव शामिल हैं। अमलोह तहसील का कुल क्षेत्रफल 26893 हेक्टेयर है। धान, गेहूं, आलू और सूरजमुखी आदि तहसील की प्रमुख फसलें हैं। अमलोह की स्थापना मूल रूप से सरहिंद के गवर्नर फैज बख्श ने की थी। 1992 में जिला फतेहगढ़ साहिब के निर्माण के बाद, अमलोह को उप–मंडल मुख्यालय का दर्जा दिया गया।[4] अमलोह तहसील जिला मुख्यालय फतेहगढ़ साहिब से 17 किलोमीटर पश्चिम दिशा में स्थित है तथा राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से 65 किलोमीटर पश्चिम दिशा में स्थित है। अमलोह तहसील के उत्तर में खमनों तहसील, दक्षिण में जिला पटियाला, पूर्व में सरहिंद तहसील तथा पश्चिम में जिला लुधियाना से घिरा हुआ है तथा इस तहसील के क्षेत्र में लोगों की मुख्य भाषा पंजाबी है, साथ ही साथ यहाँ के लोगों के द्वारा हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का भी प्रयोग किया जाता है।[5]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानचित्र–1 भारत के मानचित्र में अमलोह तहसील की स्थिति

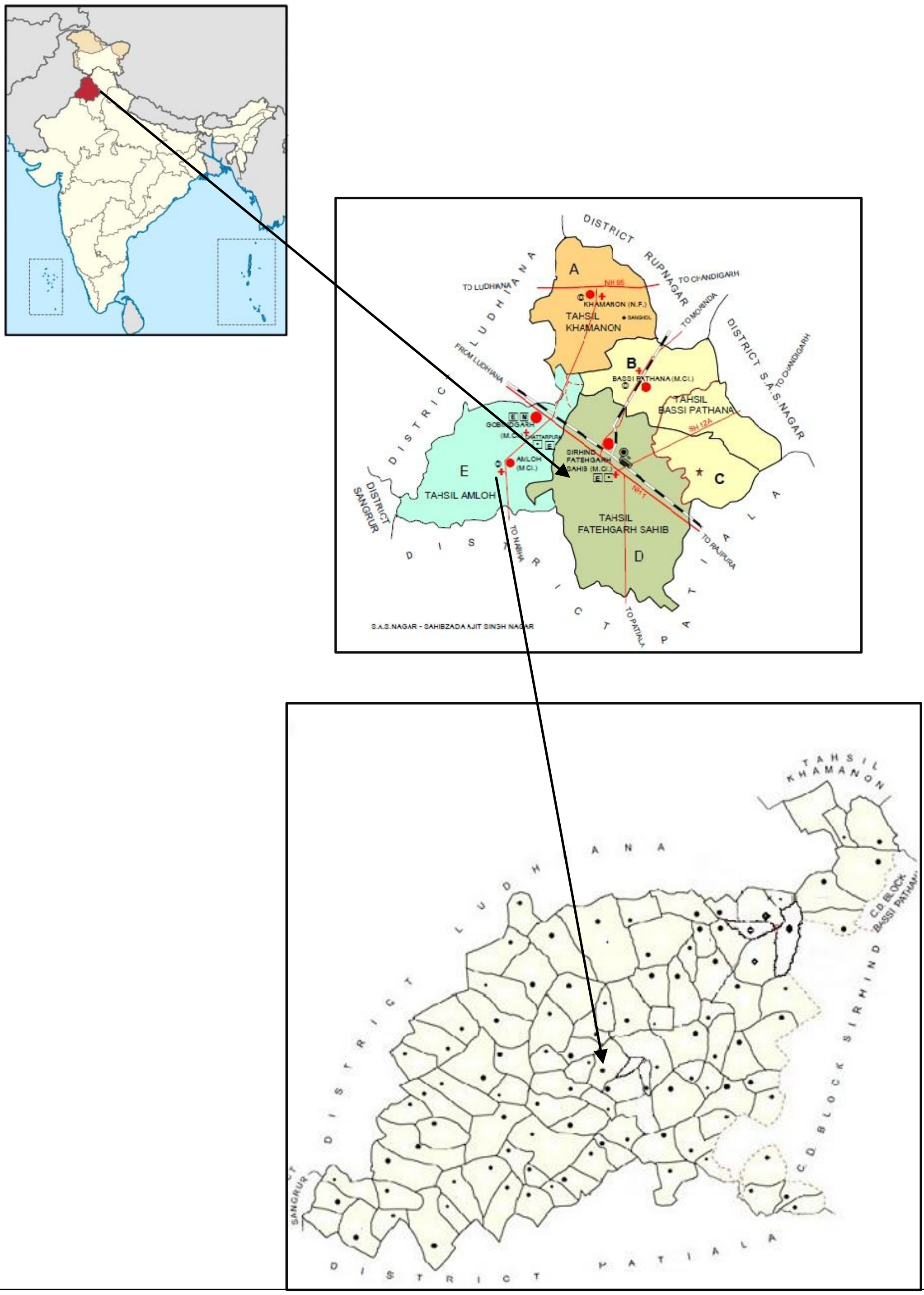

स्थलाकृति और उसका पर्यावरणः

भूवैज्ञानिक तथ्यों से पता चलता है कि संपूर्ण अध्ययन क्षेत्र भौगोलिक रूप से सतलुज और यमुना नदी के बीच दोआब के मैदान में स्थित है, यहाँ पर जंगली पौधों और जानवरों की विभिन्न किस्मों के प्रावधान के अलावा इस क्षेत्र की नदियों ने उच्च गुणवता वाली कृषि भूमि और सिंचाई की सुविधा दोनों प्रदान करके एक महत्त्वपूर्ण भुमिका निभाई। अध्ययन क्षेत्र प्राचीन सतलुज नदी और उसकी सहायक नदियों के जलोढ़ निक्षेपों से बना है। अमलोह तहसील मुख्यतः समतल मैदानी क्षेत्र है, भौगोलिक रूप से इस क्षेत्र का सामान्य ढलान दक्षिण पश्चिम की ओर है।[6] नतीजतन, जिले में लगभग 83 प्रतिशत भूमि खेती के अधीन है। मिट्टी दक्षिण–पश्चिम की ओर थोड़ी शुष्क है और इसकी उत्तर पूर्वी सीमा के साथ कई लहरदार टीले चलते हैं। रेत क्षेत्र में पाए जाने वाले टीले को स्थानीय रूप से टिब्बा कहा जाता है, जो आमतौर पर जमीनी स्तर से 4 मीटर ऊपर की ऊंचाई वाले होते हैं। जिले की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है जिसमें गर्म ग्रीष्मकाल, ठंडी सर्दी और मध्यम वर्षा होती है। क्षेत्र की सामान्य वार्षिक वर्षा 558 मिमी है और लगभग 75 प्रतिशत वर्षा जून के अंतिम सप्ताह से मध्य सितंबर के दौरान होती है।

अपवाह तंत्रः

फतेहगढ़ साहिब जिले में कोई बड़ी नदी नहीं है। जिले में सिंचाई का सबसे महत्वपूर्ण साधन नहर ही है। जिले से चार प्रमुख नहर गुजरती है जो इस प्रकार है। सरहिंद नहर, भाखड़ा नहर, नरवाना शाखा और सतलुज–यमुना लिंक नहर। भाखड़ा नहर से ही जिले को पानी मिलता है तथा जिले में भाखड़ा नहर की लम्बाई 37.68 किलोमीटर है। इस क्षेत्र में सरहिंद नहर द्वारा कोई सिंचाई नहीं की जाती है क्योंकि यह नहर केवल फीडर नहर के रूप में ही कार्य करती है। नरवाना ब्रांच (शाखा) भाखड़ा नहर की एक ब्रांच (शाखा) है तथा इस नहर का जिले में सिंचाई में कोई योगदान नहीं है। सतलुज–यमुना लिंक नहर अभी परिचालन में नहीं है। जिले में नहरों द्वारा सिंचित कुल क्षेत्र 11,000 हैक्टेयर के लगभग है।[7]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सरहिंद चो : यह सरहिंद शहर के निकट क्षेत्र के वर्षा जल से निकलने वाली एक प्रमुख मौसमी धारा है। यह जिले के उत्तर–पश्चिमी भाग से होकर बहती है और फिर नाभा तहसील से होते हुए संगरूर जिले में प्रवेश करती है।

पटियाली राव: इसे पटियावाली नाडी के नाम से भी जाना जाता है और यह जिले के दक्षिणी भाग से होकर गुजरती है। यह धारा शिवालिक पहाड़ियों से निकलती है और खराड से होते हुए जिले के दक्षिण–पश्चिम भाग से फतेहगढ़ साहिब सरहिंद क्षेत्र में प्रवेश करती है। यह पटियाला जिले में बहने के बाद अंततः घग्गर नदी में मिल जाती है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों का विवरण :

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र पुरातात्विक संपदा में बहुत समृद्ध है। जे.पी.जोशी, जी.बी. शर्मा, के.के. ऋषि, जे.एम. थापर, मधुबाला[8], सी मार्गबंधु एवं हिमांशु प्रभाराय[9] आदि द्वारा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पुरातात्विक अन्वेषण एवं उत्खनन किया गया और सरहिंद नाले के साथ साथ बड़ी संख्या में आद्य–ऐतिहासिक काल के स्थल खोजे गए। अन्वेषण के दौरान फतेहगढ़ साहिब जिले पंजाब के क्षेत्र में दधेरी, माजरी किशन वाली, फतेहगढ़ निवान, तलवाड़ा, बडाली, मनेला, संघोल, चंडीयाला, हवारा, कोटला मसूद आदि कई पुरास्थल मिले। उपरोक्त विद्वानों द्वारा इस क्षेत्र के आरंभिक इतिहास से लेकर आधुनिक काल के ऐतिहासिक स्थलों का दस्तावेजीकरण किया गया है।[10] 1976–77 में जे.पी. जोशी, मधुबाला, एस.जे. आर. बतरा, जी. लक्ष्मीनारायण, विजय कुमार आदि के निर्देशन में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अन्वेषण शाखा की एक टीम द्वारा ''दधेरी'' की खुदाई की गई थी। ''दधेरी'' उत्खनन से उत्तर हड़प्पन काल के पुरावशेष प्राप्त किए गए, जिसमें मिट्टी के चित्रित और सादे बर्तन, मिट्टी के पहियों, मोतियों, तांबे की वस्तुओं, मिट्टी के बैल, मिट्टी की चूड़ियों और कारनेलियन(carnelian) और लापीस–लाजुली (lapis lazuli) आदि पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि ''दधेरी'' उत्खनन ने भगवानपुरा (जिला कुरुक्षेत्र) में उत्खनन में उपलब्ध स्तरिकरण की पुष्टि की और उत्तर हड़प्पनकालीन संस्कृति और चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति के

मिश्रित(overlap) होने के प्रमाण भी दिए। मिश्रित अवधि के दौरान भी संरचनात्मक चरण समान हैं। संघोल में मिश्रित चरण की भी पुष्टि की गई है।[11]

अनुसंधान पद्धति :

अनुसंधान के क्षेत्र में आद्य–ऐतिहासिक काल से आरंभिक मध्यकाल समय के मानव की आजीविका के साधनों को जानने के स्रोत के रूप में पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन रिपोर्टों को प्रमुख आधार बनाया गया है साथ ही वर्तमान कार्य प्राथमिक रूप से प्रथम सूचना पर आधारित है जो कि अमलोह तहसील के गाँव–गाँव से एकत्रित की गई है। गाँवों का व्यापक सर्वेक्षण किया गया और पुरातात्विक स्थलों का जिओ टैगिंग के द्वारा निशानदेही की गई, तथा पुरास्थलों का सांस्कृतिक कालक्रम का अध्ययन किया गया। परंतु अमलोह तहसील के पुरास्थलों का सांस्कृतिक जमाव वर्तमान की आधुनिक खेती के कारण अच्छी स्थिति में नहीं है, क्योंकि खेती के क्षेत्र के विस्तार के कारण पुरास्थलों के क्षेत्र से पूरा का पूरा सांस्कृतिक जमाव उठा लिया है तथा साथ ही साथ राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–1 के निर्माण के लिए भी अनेक पुरस्थलों ˙ की पूरी की पूरी मिट्टी अर्थात सांस्कृतिक जमाव उठा ली गई है। फिर भी सर्वेक्षण व उत्खनित्त पुरस्थलों की सहायता से पुरावशेषों की पहचान करके इस क्षेत्र का सांस्कृतिक परिदृश्य प्रस्तुत किया है। वर्तमान अन्वेषण के दौरान कुल 31 पुरास्थलों का दस्तावेजीकरण किया गया है जिसमें प्रत्येक पुरास्थल की सांस्कृतिक क्रमता तथा अक्षांश और देशान्तर दर्शाए गए हैं।

अमलोह तहसील में सांस्कृतिक क्रम

सांस्कृतिक काल	पुरास्थलों की संख्या
उत्तर हड़प्पन संस्कृति (Late Harappan Period)	11
चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति (Painted Grey Ware Period)	6
ऐतिहासिक काल (Historical Period)	14
प्रारम्भिक मध्यकाल (Early Medieval Period)	29

सारणी सं॰ 1 : अमलोह तहसील में पुरास्थलों का सांस्कृतिक वितरण

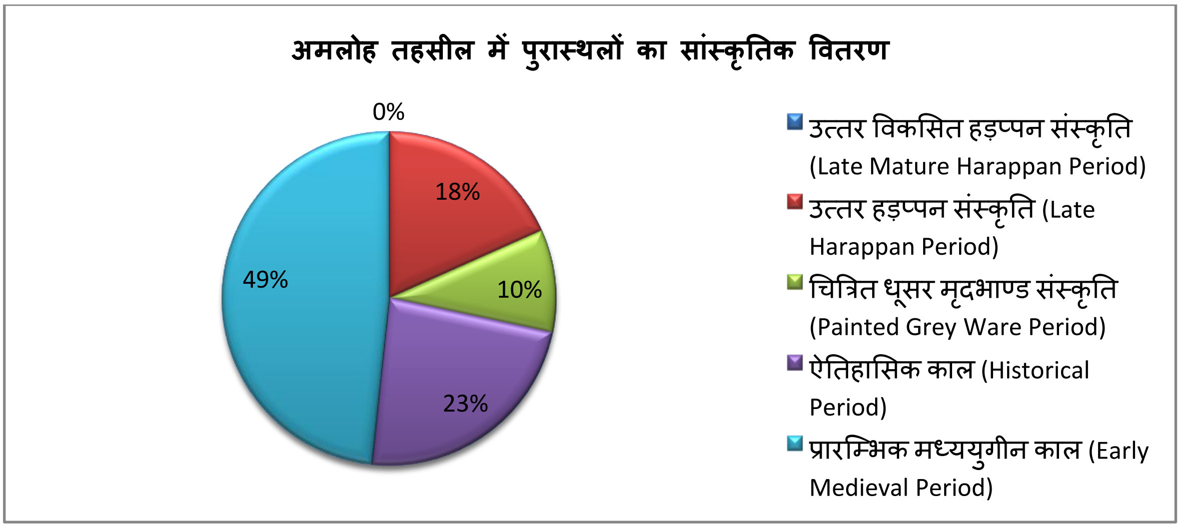

पाई चार्ट 1 : अमलोह तहसील में पुरास्थलों का सांस्कृतिक वितरण

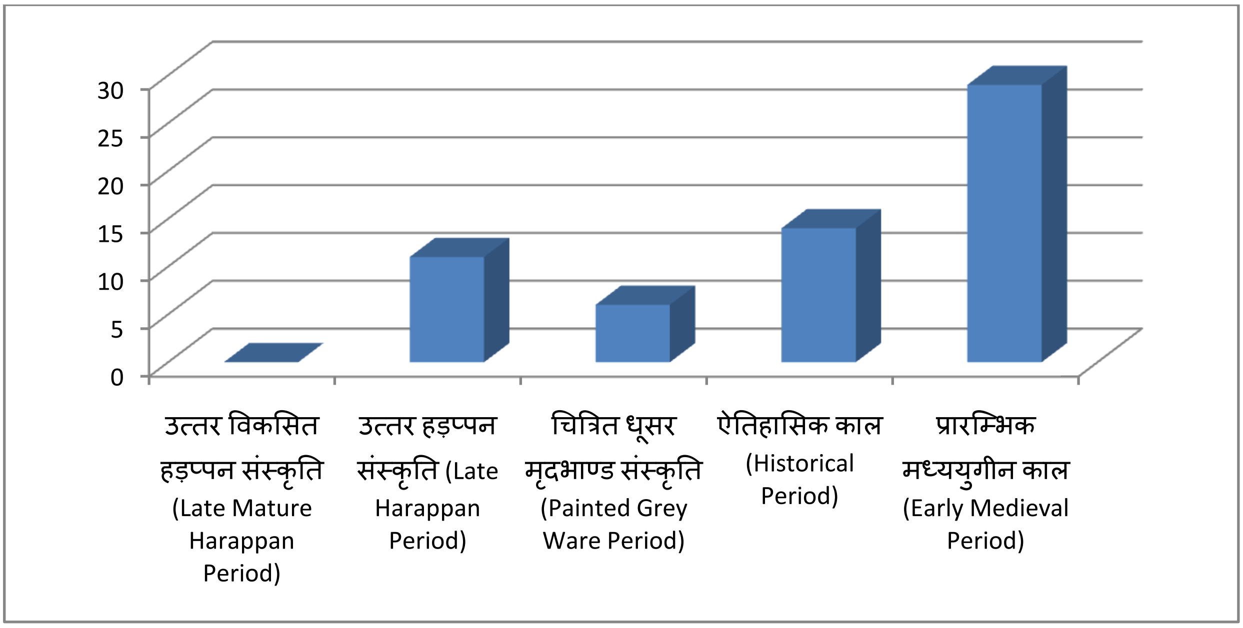

ग्राफ 1 : अमलोह तहसील में पुरास्थलों का सांस्कृतिक वितरण

तालिका 1 : अमलोह तहसील में पुरास्थलों का सांस्कृतिक वितरण

क्रं. सं.	गाँव का नाम	तहसील का नाम	उत्तरी अक्षांश	पूर्वी देशांतर	पुरास्थल का आकार (एकड़ में)	संस्कृति
1	अंनिआन	अमलोह	$30^0 60'83''$	$76^0 25'44''$	5–6	ऐतिहासिक काल, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2	बडाली	अमलोह	30⁰60′75″	76⁰23′47″	6–7	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
3	बडिनपुर	अमलोह	30⁰69′15″	76⁰24′64″	2–3	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
4	बैना बुलंद	अमलोह	30⁰58′02″	76⁰21′75″	2–3	उत्तर हड़प्पन संस्कृति ऐतिहासिक काल, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
5	ब्रिहमा	अमलोह	30⁰32′66″	76⁰09′15″	8–10	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
6	भादल थूहा	अमलोह	30⁰59′05″	76⁰24′06″	3–4	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
7	भट्टों	अमलोह	30⁰56′62″	76⁰20′77″	2–3	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
8	बुग्गा कलां	अमलोह	30⁰54′23″	76⁰12′85″	3–4	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
9	चेहलान	अमलोह	30⁰60′77″	76⁰20′24″	4–5	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
10	दधेरी	अमलोह	30⁰67′35″	76⁰31′12″	8–10	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
11	हैबतपुर	अमलोह	30⁰58′88″	76⁰26′85″	4–5	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
12	झम्बाला	अमलोह	30⁰55′32″	76⁰28′23″	4–5	चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
13	कपुरगढ़	अमलोह	30⁰56′46″	76⁰11′55″	8–10	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
14	कौलगढ़–I	अमलोह	30⁰61′42″	76⁰16′79″	12–13	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
15	कौलगढ़–II	अमलोह	30⁰61′29″	76⁰17′60″	8–10	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
16	खुम्ब	अमलोह	30⁰63′32″	76⁰26′90″	3–4	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
17	कोटली	अमलोह	30⁰55′74″	76⁰10′91″	3–4	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

18	लाडपुर	अमलोह	$30^0 59'58''$	$76^0 14'79''$	3–4	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
19	लल्लों खुर्द	अमलोह	$30^0 61'28''$	$76^0 12'21''$	8–10	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
20	लोहार माजरा	अमलोह	$30^0 69'77''$	$76^0 33'30''$	5–6	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
21	मछराई कलां	अमलोह	$30^0 58'10''$	$76^0 18'05''$	8–10	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
22	मेहमूदपुर	अमलोह	$30^0 61'97''$	$76^0 13'97''$	4–5	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
23	मैनपुर	अमलोह	$30^0 59'69''$	$76^0 17'01''$	4–5	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
24	माजरी किशनवाली	अमलोह	$30^0 33'31''$	$76^0 22'98''$	10–12	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
25	मानगढ़	अमलोह	$30^0 59'87''$	$76^0 22'27''$	5–6	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
26	रुड़की	अमलोह	$30^0 58'13''$	$76^0 15'78''$	5–6	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
27	सलाना दुल्ला सिंह वाला	अमलोह	$30^0 63'50''$	$76^0 20'48''$	8–10	चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
28	सौंटी	अमलोह	$30^0 61'64''$	$76^0 24'30''$	8–10	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
29	तरंगला	अमलोह	$30^0 62'70''$	$76^0 14'21''$	5–6	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

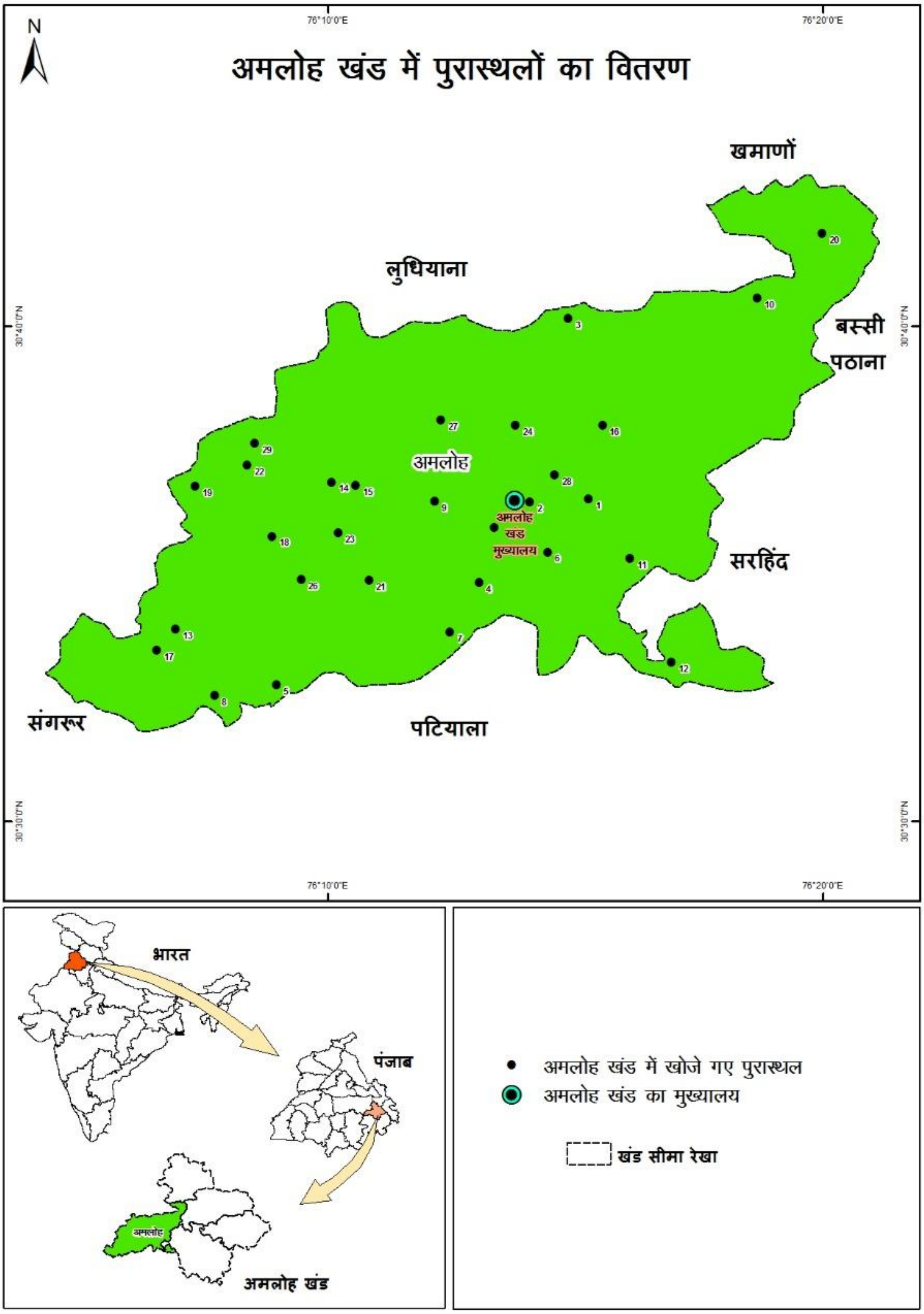

मानचित्र सं. 1 : अमलोह तहसील में पुरास्थलों का वितरण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सांस्कृतिक अनुक्रम :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समूह के रूप में रहना पसंद करते हैं इस प्रकार बस्ती वह स्थान होता है जहाँ पर मानव की सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं। और बस्ती की बसासत के लिए पर्यावरण एक महत्वपूर्ण कारक होता है। पुरातत्ववेत्ता बस्ती प्रारूप और पुरस्थलों के स्थानीय विस्तार और इन पुरास्थालों से प्राप्त सामग्री के आधार पर ही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक आदि गतिविधियों का अध्ययन करके सांस्कृतिक अनुक्रम का विश्लेषण करते हैं। भारत में भी अनेक पुरातत्ववेत्ताओं एम. के. धवलीकर, जी. एल. पासेल, वसंत शिंदे, आर. सी. ठाकरान, मक्खन लाल तथा जी.इरदोसी आदि प्रमुख हैं। बस्ती प्रारूप व सांस्कृतिक अनुक्रम के कार्य पर अध्ययन किया और उनके द्वारा कई नई तकनीकों को शामिल किया जैसे पारिस्थितिकी, स्थलाकृति, मिट्टी के प्रकार, भूमि का उपयोग,जल विज्ञान, जन संसाधन, तकनीकी जानकारी और सामाजिक संगठन आदि। इस प्रकार हम देखते हैं कि बस्ती प्रारूप पर विद्वानों ने अलग–अलग सुझाव दिए हैं इसलिए बस्ती प्रारूप को एक उपागम के अंतर्गत नहीं देखना चाहिए, बल्कि उसे सभी उपागमों के अंतर्गत समझने या अध्ययन करने की जरूरत है।

उत्तर हड़प्पन संस्कृति :

अमलोह तहसील क्षेत्र से हड़प्पन संस्कृति के 11 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं उनसे इस क्षेत्र में मानव जीवन की शुरुवात होने की जानकारी मिलती है तथा इससे मानव की सामाजिक और आर्थिक गतिविधियाँ मुख्यतः हड़प्पन काल में ही शुरू हुई। इस क्षेत्र से प्राप्त पुरावशेषों में मुख्यतः मिट्टी के बर्तन प्रमुख है जो कि चाक पर बने हैं तथा लाल पोलिश व काले रंग से अलंकृत हैं। अमलोह तहसील क्षेत्र में फतेहगढ़ निवान, लोहार माजरा कलां, दधेरी, तलवाड़ा, माछरई कलां ,बरहिमा, बुग्गा कलां, कोटली, भैनीबुलंद, चैलान, मैनपुर, कोलगढ़–2 आदि से सर्वेक्षण के दौरान उपरोक्त पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। दधेरी उत्खनन क्षेत्र से भी हड़प्पनकालीन पुरावशेषों प्राप्त हुए हैं जिनकी सहायता से हम हड़प्पन कालीन मानव के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल करते हैं। (तालिका–1)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति :

अध्ययन क्षेत्र में मानव की बस्तियों के सांस्कृतिक क्रम में अगला चरण धूसर मृदभाण्ड, चित्रित धूसर मृदभाण्ड तथा इसके समवर्ती मृदभाण्ड मिलते हैं। अमलोह तहसील क्षेत्र से धूसर मृदभाण्ड, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति के 06 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं। धूसर मृदभाण्ड के बर्तन मुख्यतः बिना चित्रित किए हुए होते थे। जबकि चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति काल के मृदभाण्ड प्रायः चाक पर बने होते थे तथा पतले होते थे जिन्हें काले रैखिक (ज्यामितीय) डिजाइनों के साथ चित्रित किया गया था। इन मृदभाण्डो में मुख्य रूप से कटोरे आदि मिलते हैं। अमलोह तहसील के क्षेत्र झमबाला,माजरी किशने वाली, दधेरी, बरहिमा आदि स्थानों से सर्वेक्षण में चित्रित धूसर मृदभाण्ड तथा इसके समवर्ती मृदभाण्ड मिलते हैं।(तालिका–1)

ऐतिहासिक कालः

इस क्षेत्र में उपनिवेश के बाद के चरण को ऐतिहासिक समाजों द्वारा प्रतिष्ठित किया गया है। सर्वेक्षण के दौरान शोधकर्ता को इस अवधि के 14 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं। ऐतिहासिक काल में आने से सामान्य रूप से एक समृद्ध स्थिति प्रमाणित होती है। मुख्यतः ऐतिहासिक काल शब्द का प्रयोग मौर्य, कुषाण और गुप्त काल के लिए किया जाता है। पुरास्थलों की बढ़ती संख्या क्षेत्र में कई ऐतिहासिक घटनाओं जैसे युद्ध, प्रवास, बीमारी आदि का परिणाम हो सकती है। ईसाई युग की प्रारंभिक शताब्दियों के दौरान, विशेष रूप से रंगमहल काल (कुषाण–गुप्त काल), अधिक स्थलों पर कब्जा देखा जाता है। इन साइटों पर मुहर लगी डिजाइनों के साथ लाल रंग के बर्तन मिले हैं। इस प्रकार के मृदभांड आमतौर पर शुंग–कुषाण काल से जुड़े होते हैं। इस काल के पुरावशेषों और अन्य भौतिक अवशेषों की खोज से यह स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र इस काल में कुषाण क्षेत्र का हिस्सा बना रहा, जिसने लंबी अवधि तक शासन किया। अमलोह तहसील के झमबाला, फतेहगढ़ निवान, अनियान, हैबतपुर, बरहिमा, बुग्गा कलां, रुड़की, मनगढ़, सलाना दूलासिंह वाला, लाडपुर व टंगरला आदि पुरास्थलों से उपरोक्त प्रकार के मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।(तालिका–1)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रारंभिक मध्यकाल :

सर्वेक्षण के दौरान शोधकर्ता को इस अवधि के 29 प्रारंभिक मध्ययुगीन पुरास्थल प्राप्त हुए हैं। इस काल में यह क्षेत्र अधिक घनी आबादी वाला भी था। यह क्षेत्र इस अर्थ में काफी खराब है कि स्थापत्य गतिविधियों के साक्ष्य के बहुत कम टुकड़े समय तक जीवित रहे हैं। अन्वेषण के समय परवर्ती मुगल स्थापत्य विशेषताओं को भी देखा गया है। भारत में भी और पंजाब में भी छठी शताब्दी से 13 वीं शताब्दी तक की अवधि को प्रारंभिक मध्यकालीन काल माना जाता है, जिसके दौरान विभिन्न योद्धा कबीले समूह आदि उत्तर में राजनीतिक शक्ति रूप से महत्वपूर्ण थे। इस काल में यह क्षेत्र घनी आबादी वाला था और लोगों को अपनी बस्तियों के साथ–साथ कृषि और घरेलू गतिविधियों के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने पहले जलोढ़ मैदान को चुना लेकिन जब वह पर्याप्त नहीं था तो उन्होंने रेतीले क्षेत्र को भी चुना। इन घनी आबादी वाली बस्तियों ने इस क्षेत्र के महत्व को दिखाया जो आगे मध्यकालीन काल के साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा समर्थित है।इस अवधि मे मृदभाण्ड चाक पर बनाऐ जाते थे। मृदभाण्डों पर मुख्य चित्रित डिजाइन, ज्योमितिय और रैखिक हैं। अमलोह तहसील क्षेत्र के झमबाला, फतेहगढ़ निवान, लोहार माजरा कलां, बदिनपुर, कुंभ, दधेरी, बडाली, अनियान, हैबतपुर, भादल थूहा, भट्टों, माछरई कलां, बरहिमा, कोटली, कपूरगढ़, रुड़की, भैनीबुलंद, मनगढ़, सलाना दूलासिंह वाला, चैलान, मैनपुर, लाडपुर, ललोन खुर्द, महमूदपुर, टंगरला, कोलगढ़–1,कोलगढ़–2 आदि अनेक पुरस्थलों से उपरोक्त प्रकार के मृदभाण्ड मिलते हैं। (तालिका–1)

सारांश :

अमलोह तहसील क्षेत्र में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनित पुरास्थलों से प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि इस क्षेत्र में मानव जीवन का प्रारंभ आद्ऐतिहासिक अवधि के हड़प्पन संस्कृति काल में हुआ और इसी काल से इस क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों की शुरूआत हुई। इस क्षेत्र में बस्तियों की बसावट व आजीविका में जलवायु परिस्थितयाँ तथा तकनीकी बोध ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह

क्षेत्र सतलुज तथा इसकी सहायक नदियों से निर्मित जलोढ़ मिट्टी वाला मैदान है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों में उपजाऊ मिट्टी एवं जल स्रोत के रूप में समृद्ध है जिन्होंने न केवल मानव को यहाँ बसने के लिए प्रेरित किया होगा बल्कि उनकी आजीविका के लिए भी पर्याप्त संसाधन भी उपलब्ध करवाए। अमलोह क्षेत्र में शोध प्रयासों के परिणामस्वरूप प्राप्त पुरास्थलों की कुल संख्या–29 है, तथा सभी पुरास्थलों का अक्षांश व देशांतर हमें ज्ञात हो पाया। जिनका सांस्कृतिक विभाजन इस प्रकार है–हड़प्पनकालीन–11, धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति –06, प्रारंभिक ऐतिहासिक काल–14 व प्रारंभिक मध्यकाल–29। अध्ययन क्षेत्र में पाये गये कुल–29 पुरास्थलों की स्थिति से पता चलता है कि अधिकांश पुरास्थल आसपास की भूमि से ऊंचाई पर स्थित हैं। निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि जनसंख्या के निरंतर दबाव और कृषि गतिविधियों की तीव्रता ने इस क्षेत्र के सभी प्रकार के पुरातात्विक स्थलों के व्यापक विनाश की अथक प्रक्रिया की भावना पैदा की है और इसी कारण आज अमलोह क्षेत्र के ज्यादातर पुरास्थल या तो खत्म हो गए है या खत्म होने कि कगार पर है।

पाद टिप्पणियाँ :

1. *पंजाब स्टेट गजेट्टीर,* एडिट.जगमोहन सिंह हंस, (2000), पृ. 100–103
2. डी.सी. सरकार, *एंसीएंट ज्योग्राफी ऑफ दा पंजाब,* एडि. एल.म. जोशी, *हिस्टोरी ऑफ दा पंजाब,* (1997), पृ. 26–31
3. एचटीटीपीएसः*//डबल्यूडबल्यूडबल्यू.इंडियानेट्जोन.कॉम/47/फतेहगढ़–साहिब–डिस्ट्रिक्ट.एचटीएम,* पृ. 100–103
4. एचटीटीपीएस*//सेन्ससइंडिया.गोव.इन/2011सेन्सस/डीसीएचबी/डीसीएचबी–ए/03/0306–पार्ट–ए– डीसीएचबी–फतेहगढ,* पृ. 7–12
5. डिस्ट्रिक्ट ओफिफसियल वैबसाइट.*डबल्यूडबल्यूडबल्यू.फतेहगढ़साहिब.निक.इन/अबाउट.एचटीएम.*
6. *सेंसस ऑफ इण्डिया (2011), सीरीज–4, पार्ट–12बी,* डिस्ट्रिक्ट, सेंसस हैंडबुक फतेहगढ़ साहिब, पृ॰ 14–15

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

7. प्रशांत कुमार, प्रवीन के॰ ठाकुर एंड अदर्स (2016), असेसमेंट ऑफ दी इफैक्टिवनेस ऑफ ड्रास्टिक इन प्रिडक्टिंग द वुल्लरबिलिटी ऑफ ग्राउण्ड वाटर टू कांटमिनेशन : ए केस स्टडी फ्राम फतेहगढ़ साहिब डिस्ट्रिक्ट इन पंजाब, *इण्डिया एन्वायरमेंटल अर्थ साईंसिज*, आईएसएसएन 186–6280, वॉल्यूम 75(10) पृ॰ 3–4
8. मधूबाला, *आर्कोलोजी ऑफ पंजाब*, (1997), पृ.–36–38
9. हिमांशू प्रभा रॉय, (एडि.) *संघोल एण्ड दा आर्कोलोजी ऑफ पंजाब*, (2010), पृ. 28–45
10. *आई.ए.आर*, 1977–78, पृ. 43–45
11. *आई.ए.आर*, 1976–77, पृ. 41–45